श्रीमद्भागवत महापुराण में 'वेदान्त' विषयक सन्दर्भ

अंकित कुमार

'वेदान्त' का शब्दार्थ है– 'वेद का अन्त'। कोशकारों के अनुसार 'अन्त' शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है– निश्चय या निर्णय। इस अर्थ के अनुसार वेदान्त का अभिप्राय होगा– वेदों का निर्गलितार्थ। प्रारम्भ में इस शब्द (वेदान्त) से वेदों का अन्तिम भाग अर्थात् उपनिषदों का बोध होता था। बाद में उपनिषदों के आधार पर जिन विचारों का विकास हुआ, उनके लिए भी यह शब्द व्यवहृत होने लगा। उपनिषद् वेद की चरम परिणिति है। वेदों में जो विचार पाये जाते है, उन्हीं का परिपक्व रूप उपनिषद् में पाया जाता है। उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भागवतगीता को वेदान्त की 'प्रस्थान–त्रयी' कहा जाता है क्योंकि ये वेदान्त के सर्वमान्य प्रमुख ग्रन्थ है। अद्वैतवेदान्त सम्प्रदाय के आचार्यों में शंकराचार्य जी मुख्य है, जिन्होंने सम्पूर्ण प्रस्थानत्रयी पर अपना भाष्य लिखा। वेदान्त सम्प्रदाय के आचार्यों में रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य और वल्लभाचार्य जी प्रमुख है, जिन्होंने अपने–अपने मत से वेदान्त को पल्लवित एवं पुष्पित किया। उपनिषद् प्रतिपादित जीव और ब्रह्म की एकता, जो शुद्ध चैतन्य रूप है इस शास्त्र का प्रमेय है क्योंकि समस्त वेदान्त वाक्यों का तात्पर्य जीव और ब्रह्म की वास्तविक (आत्यन्तिक) एकता ही है। श्रीमद्भागवत महापुराण में वेदान्त के तत्त्व जीव, ब्रह्म, जगत्, माया आदि का सन्दर्भ प्राप्त है।